वर्ष 17 अंक 17 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, मंगलवार 17 जनवरी 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com

7 हेयर स्टाइल के लिए रोहित सुचंती ने पॉपुलर रैपर ड्रेक से ली प्रेरणा

रबी प्याज उत्पादन की उन्नत तकनीकः डॉ. राम बटुक सिंह

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ राम बटुक सिंह ने किसानों हेतु प्याज उत्पादन की उन्नत तकनीक विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि प्याज की खेती रबी एवं खरीफ दोनों मौसम में की जाती है। उन्होंने बताया कि दैनिक जीवन में रोजमर्रा की प्याज खाने की आवश्यक खाद्य है।उन्होंने कहा कि प्याज महत्वपूर्ण व्यवसायिक फसल है।तथा भारत के प्याज की मांग विदेशों में भी अच्छी है।इसलिए हमारा देश प्याज का प्रमुख निर्यातक देश है। इसका महत्व आहार के रूप में तो है ही लेकिन प्याज का औषधियों के रूप में भी महत्वपूर्ण स्थान है। जैसे पीलिया,कब्ज,बवासीर और यकृत संबंधी रोगों में बहुत लाभकारी पाया गया है। डॉ सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को प्याज

की उन्नत तकनीक और उन्नत किस्मों की जानकारी आवश्यक है प्याज के कंदो के विकास के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान आवश्यक है। उन्होंने प्याज की उन्नत किस्मों के बारे में बताया कि सफेद रंग वाली किस्मे भीमा शुभरा, भीमा श्वेता, नासिक सफेद, पूसा व्हाइट राउंड जबकि लाल रंग की किस्में भीमा लाल, भीमा सुपर,कल्याणपुर लाल,अर्का प्रगति इत्यादि है। उन्होंने बताया कि प्याज की फसल में नाइट्रोजन 100 से 120 किलोग्राम, फास्फोरस 50 से 60 किलोग्राम, पोटाश 60 से 70 किलोग्राम एवं सल्फर 30 से 35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रयोग करना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि प्याज की रोपाई का उत्तम समय फरवरी अंतिम सप्ताह तक है। डॉ सिंह ने बताया कि कतारों से कतारों की दूरी 15 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर पौधों की रोपाई करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि रोपाई से पूर्व पौधों की जड़ों को 0.1 प्रतिशत कार्बेंडाजिम + 0.1 प्रतिशत मोनोक्रोटोफॉस के घोल में डुबोकर रोपाई करने से पौधे स्वस्थ रहते हैं उन्होंने कहा कि यदि किसान भाई तकनीकी विधियों का प्रयोग करते हुए प्याज की खेती करते हैं तो प्याज की उपज 350 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्याज के कंदों की पैदावार होगी।

रहस्य संदेश

RNI. NO. UPHIN/2007/20715

– 17, एटा से प्रकाशित, मंगलवार, 17 जनवरी, 2023 पृष्ठ : 8 मूल्य : 50 पैसा मात्र

रबी प्याज उत्पादन की उन्नत तकनीक – डा0 राम बटुक सिंह

(अनवर अशरफ) कानपुर (रहस्य संदेश)/चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कल्यानपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ राम बटुक सिंह ने किसानों हेतु प्याज उत्पादन की उन्नत तकनीक विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि प्याज की खेती रबी एवं खरीफ दोनों मौसम में की जाती है। उन्होंने बताया कि दैनिक जीवन में रोजमर्रा की प्याज खाने की आवश्यक खाद्य है।उन्होंने कहा कि प्याज महत्वपूर्ण व्यवसायिक फसल है।तथा भारत के प्याज की मांग विदेशों में भी अच्छी है।इसलिए हमारा देश प्याज का प्रमुख निर्यातक देश है। इसका महत्व आहार के रूप मे तो है ही लेकिन प्याज का औषधियों के रूप में भी महत्वपूर्ण स्थान है। जैसे पेचिस्या,कब्ज,बवासीर और यकृत संबंधी रोगो मे बहुत लाभकारी पाया गया है। डॉ सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को प्याज की उन्नत तकनीक और उन्नत किस्मों की जानकारी आवश्यक है प्याज के कंदो के विकास के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान आवश्यक है। उन्होंने प्याज की उन्नत किस्मों के बारे में बताया कि सफेद रंग वाली किस्मे भीमा शुभरा, भीमा श्वेता, नासिक सफेद, पूसा व्हाइट राउंड जबकि लाल रंग की किस्में भीमा लाल, भीमा सुपर,कल्यानपुर लाल,अर्का प्रगति इत्यादि है। उन्होंने बताया कि प्याज की फसल में नाइट्रोजन 100 से 120 किलोग्राम, फास्फोरस 50 से 60 किलोग्राम, पोटाश 60 से 70 किलोग्राम एवं सल्फर 30 से 35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रयोग करना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि प्याज की रोपाई का उत्तम समय फरवरी अंतिम सप्ताह तक है। डॉ सिंह ने बताया कि कतारों से कतारों की दूरी 15 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर पौधों की रोपाई करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि रोपाई से पूर्व पौधों की जड़ों को 0.1: कार्बेंडाजिम 0.1: मोनोक्रोटोफॉस के घोल में डुबोकर रोपाई करने से पौधे स्वस्थ रहते है उन्होंने कहा कि यदि किसान भाई तकनीकी विधियों का प्रयोग करते हुए प्याज की खेती करते है तो प्याज की उपज 350 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्याज के कंदो की पैदावार होगी।

www.dinartimes.in
DT दीनार टाइम्स

आलू फसल को रोगों से बचाएं

डीटीएनएन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अंतर्गत संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने आलू फसल में पछेती झुलसा रोग के प्रबंधन हेतु किसान भाइयों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि मौसम में त्वरित बदलाव के कारण फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।उन्होंने कहा कि आलू फसल में पछेती झुलसा रोग और माहूँ जैसे कीट तीव्र गति से बढ़ सकते हैं। जिससे आलू की फसल को नुकसान होने की संभावना है। अतः किसान भाई पछेती झुलसा रोग के प्रबंधन हेतु कवकनाशी साईमॉक्सीनिल एवं मैनकोज़ेब 0.2त्न के मिश्रण का तुरंत फसल पर छिड़काव कर दें। वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने किसानों को सलाह दी है कि वायरस रोग का प्रसार सफेद मक्खी द्वारा होता है। अतः रोग को एक पौधे से दूसरे पौधों पर स्थानांतरण को रोकने एवं माहू कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03त्न घोल को कवकनाशी साईमॉक्सीनिल एवं मैनकोज़ेब 0.2त्न के मिश्रण के साथ ही मिलाकर छिड़काव करें। डॉक्टर सिंह ने किसानों को सलाह दी है। कि जब तक मौसम में बदली और उतार-चढ़ाव रहे तब तक आलू की फसल की देखरेख अत्यंत आवश्यक है।

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpressive janexpressive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 97
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
मंगलवार | 17 जनवरी, 2023

फास्ट फॉरवर्ड

प्याज उत्पादन की उन्नत तकनीक विषय पर एडवाइजरी जारी

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ राम बटुक सिंह ने बीते दिन सोमवार को किसानों के लिए प्याज उत्पादन की उन्नत तकनीक विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि प्याज की खेती रवी एवं खरीफ दोनों मौसम में की जाती है। प्याज महत्वपूर्ण व्यवसायिक फसल है तथा भारत के प्याज की मांग विदेशों में भी अच्छी है। इसलिए हमारा देश प्याज का प्रमुख निर्यातक देश है। औषधीय रूप में प्याज पीलिया, कब्ज, बवासीर और यकृत संबंधी रोगों में बहुत लाभकारी पाया गया है। डॉ सिंह ने किसानों को बताया प्याज के कंदो के विकास के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान आवश्यक है। उन्होंने प्याज की उन्नत किस्म सफेद रंग वाली किस्मे भीमा शुभरा, भीमा श्वेता, नासिक सफेद, पूसा व्हाइट राउंड जबकि लाल रंग की किस्में भीमा लाल, भीमा सुपर, कल्याणपुर लाल, अर्का प्रगति के बारे में बताया। प्याज की फसल में नाइट्रोजन 100 से 120 किलोग्राम, फास्फोरस 50 से 60 किलोग्राम, पोटाश 60 से 70 किलोग्राम एवं सल्फर 30 से 35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रयोग करना आवश्यक है। प्याज की रोपाई का उत्तम समय फरवरी अंतिम सप्ताह तक है।

UPHIN 47963

कानपुर

प्रगति प्रभात

मंगलवार, 17 जनवरी 2023

ट ने फांसी लगा की आत्महत्या 06 कोहली आईपीएलसे पहले ही तोड़ेंगे सचिन का रिकॉर्ड 07 बाइ

रबी प्याज उत्पादन की उन्नत तकनीक: डॉ.राम बटुक

कानपुर। सीएसए के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ राम बटुक सिंह ने किसानों हेतु प्याज उत्पादन की उन्नत तकनीक विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि प्याज की खेती रबी एवं खरीफ दोनों मौसम में की जाती है। उन्होंने बताया कि दैनिक जीवन में रोजमर्रा की प्याज खाने की आवश्यक खाद्य है।उन्होंने कहा कि प्याज महत्वपूर्ण व्यवसायिक फसल है तथा भारत के प्याज की मांग विदेशों में भी अच्छी है इसलिए हमारा देश प्याज का प्रमुख निर्यातक देश है। इसका महत्व आहार के रूप में तो है ही लेकिन प्याज का औषधियों के रूप में भी महत्वपूर्ण स्थान है। जैसे पीलिया, कब्ज, बवासीर और यकृत संबंधी रोगों में बहुत लाभकारी पाया गया है। डॉ सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को प्याज की उन्नत तकनीक और उन्नत किस्मों की जानकारी आवश्यक है प्याज के कंदो के विकास के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान आवश्यक है। उन्होंने प्याज की उन्नत किस्मों के बारे में बताया कि सफेद रंग वाली किस्मे भीमा शुभरा, भीमा श्वेता, नासिक सफेद, पूसा व्हाइट राउंड जबकि लाल रंग की किस्में भीमा लाल, भीमा सुपर, कल्याणपुर लाल, अर्का प्रगति इत्यादि है। उन्होंने बताया कि प्याज की फसल में नाइट्रोजन 100 से 120 किलोग्राम, फास्फोरस 50 से 60 किलोग्राम, पोटाश 60 से 70 किलोग्राम एवं सल्फर 30 से 35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रयोग करना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि प्याज की रोपाई का उत्तम समय फरवरी अंतिम सप्ताह तक है। डॉ सिंह ने बताया कि कतारों से कतारों की दूरी 15 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर पौधों की रोपाई करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि रोपाई से पूर्व पौधों की जड़ों को 0.1ब कार्बेंडाजिम + 0.1ब मोनोक्रोटोफॉस के घोल में डुबोकर रोपाई करने से पौधे स्वस्थ रहते हैं उन्होंने कहा कि यदि किसान भाई तकनीकी विधियों का प्रयोग करते हुए प्याज की खेती करते हैं तो प्याज की उपज 350 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्याज के कंदों की पैदावार होगी।

रबी प्याज उत्पादन की उन्नत तकनीकः डॉ राम बटुक सिंह

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ राम बटुक सिंह ने किसानों हेतु प्याज उत्पादन की उन्नत तकनीक विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि प्याज की खेती रवी एवं खरीफ दोनों मौसम में की जाती है। उन्होंने बताया कि दैनिक जीवन में रोजमर्रा की प्याज खाने की आवश्यक खाद्य है।उन्होंने कहा कि प्याज महत्वपूर्ण व्यवसायिक फसल है।तथा भारत के प्याज की मांग विदेशों में भी अच्छी है। इसलिए हमारा देश प्याज का प्रमुख निर्यातक देश है। इसका महत्व आहार के रूप में तो है ही लेकिन प्याज का औषधियों के रूप में भी महत्वपूर्ण स्थान है। जैसे पीलिया,कब्ज,बवासीर और यकृत संबंधी रोगों में बहुत लाभकारी पाया गया है। डॉ सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को प्याज की उन्नत तकनीक और उन्नत किस्मों की जानकारी आवश्यक है प्याज के कंदो के विकास के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान आवश्यक है। उन्होंने प्याज की उन्नत किस्मों के बारे में बताया कि सफेद रंग वाली किस्मे भीमा शुभरा, भीमा श्वेता, नासिक सफेद, पूसा व्हाइट राउंड जबकि लाल रंग की किस्में भीमा लाल, भीमा सुपर,कल्याणपुर लाल,अर्का प्रगति इत्यादि है। उन्होंने बताया कि प्याज की फसल में नाइट्रोजन 100 से 120 किलोग्राम, फास्फोरस 50 से 60 किलोग्राम, पोटाश 60 से 70 किलोग्राम एवं सल्फर 30 से 35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रयोग करना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि प्याज की रोपाई का उत्तम समय फरवरी अंतिम सप्ताह तक है। डॉ सिंह ने बताया कि कतारों से कतारों की दूरी 15 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर पौधों की रोपाई करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि रोपाई से पूर्व पौधों की जड़ों को 0.1 प्रतिशत कार्बेंडाजिम + 0.1 प्रतिशत मोनोक्रो टोफॉस के घोल में डुबोकर रोपाई करने से पौधे स्वस्थ रहते हैं उन्होंने कहा कि यदि किसान भाई तकनीकी विधियों का प्रयोग करते हुए प्याज की खेती करते हैं तो प्याज की उपज 350 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्याज के कंदों की पैदावार होगी।